



IJRTSM

INTERNATIONAL JOURNAL OF RECENT TECHNOLOGY SCIENCE & MANAGEMENT

“लीलाधर जगूड़ी और अरुण कमल के काव्य में सामाजिक यथार्थ और प्रतिरोध चेतना: एक तुलनात्मक अध्ययन”

शिवम मिश्रा¹, डॉ अर्पणा बादल², डॉ रचना तैलंग³

¹ शोधार्थी, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश

² सहायक प्राध्यापक, सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, भोपाल मध्य प्रदेश

³ प्राध्यापक, पीएम कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस, शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय भोपाल, मध्य प्रदेश

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र में समकालीन हिंदी कविता के दो महत्वपूर्ण कवियों, लीलाधर जगूड़ी और अरुण कमल के काव्य में सामाजिक यथार्थ तथा प्रतिरोध चेतना का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक असमानता, आर्थिक विषमता, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, शोषण, राजनीतिक पाखंड और आम आदमी की असुरक्षा ने समकालीन हिंदी कविता को एक नई वैचारिक दिशा प्रदान की। इस संदर्भ में दोनों कवियों ने अपनी विशिष्ट काव्य-शैली के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों, मानवीय पीड़ा और व्यवस्था-विरोधी चेतना को अभिव्यक्त किया है। लीलाधर जगूड़ी की कविता में सामाजिक यथार्थ मुख्यतः प्रतीकों, बिंबों, व्यंग्य और विडंबना के माध्यम से प्रस्तुत होता है, जबकि अरुण कमल की कविता में श्रम, भूख, गरीबी, वर्गीय असमानता और शोषित वर्ग के संघर्ष का प्रत्यक्ष एवं जनपक्षधर चित्रण मिलता है। प्रस्तुत अध्ययन में दोनों कवियों की काव्य-दृष्टि, भाषा-शैली, आम आदमी की उपस्थिति, जनपक्षधरता तथा प्रतिरोध के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दोनों कवि अभिव्यक्ति की भिन्न पद्धतियों को अपनाते हुए भी सामाजिक न्याय, मानवीय गरिमा और समानता के पक्षधर हैं। इस प्रकार उनका काव्य समकालीन हिंदी कविता में सामाजिक चेतना, अन्याय के प्रति प्रतिरोध और सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा को समझने का महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करता है।

प्रमुख शब्द: लीलाधर जगूड़ी, अरुण कमल, सामाजिक यथार्थ, प्रतिरोध चेतना, समकालीन हिंदी कविता, जनपक्षधरता, सामाजिक असमानता, व्यवस्था-विरोध।

I. प्रस्तावना

समकालीन हिंदी कविता भारतीय समाज के बदलते हुए सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक यथार्थ की संवेदनशील अभिव्यक्ति है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक न्याय, समानता और विकास की जो अपेक्षाएँ निर्मित हुई थीं, वे समय के साथ अनेक स्तरों पर टूटती हुई दिखाई दीं। सत्ता-संरचना, प्रशासनिक व्यवस्था, पूँजीवादी विस्तार, बेरोजगारी, गरीबी, भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता और आम आदमी की असुरक्षा ने हिंदी कविता को नए प्रकार की वैचारिक दिशा प्रदान की। इसी कारण समकालीन हिंदी कविता केवल भावुक या सौंदर्यपरक अभिव्यक्ति न रहकर सामाजिक हस्तक्षेप, जनपक्षधरता और प्रतिरोध चेतना की कविता के रूप में विकसित हुई [1]।

लीलाधर जगूड़ी और अरुण कमल इसी समकालीन काव्य-धारा के दो महत्वपूर्ण कवि हैं। दोनों कवियों ने अपने काव्य में मनुष्य, समाज, सत्ता और व्यवस्था के बीच उत्पन्न तनावों को गहराई से अभिव्यक्त किया है। लीलाधर जगूड़ी की कविता में व्यंग्य, प्रतीक,

बिंब और वैचारिक जटिलता के माध्यम से सामाजिक यथार्थ सामने आता है, जबकि अरुण कमल की कविता में जनजीवन, श्रम, संघर्ष और सामाजिक असमानता का प्रत्यक्ष चित्रण दिखाई देता है [2]। दोनों कवि अपने समय की विडंबनाओं को पहचानते हैं और कविता को सामाजिक चेतना का माध्यम बनाते हैं।

लीलाधर जगूड़ी का काव्य-संसार आधुनिक मनुष्य की असुरक्षा, सामाजिक विखंडन, सत्ता की क्रूरता और नैतिक संकटों को प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है। उनकी कविता में प्रतिरोध सीधे नारे के रूप में नहीं आता, बल्कि व्यंग्य, विडंबना और बौद्धिक बेचैनी के रूप में व्यक्त होता है। दूसरी ओर, अरुण कमल की कविता में प्रतिरोध अधिक स्पष्ट, जनधर्मी और संघर्षशील रूप में मिलता है। उनकी कविता में आम आदमी, मजदूर, किसान, भूख, श्रम और शोषण जैसे विषय केंद्रीय स्थान प्राप्त करते हैं [3]।

इस शोध-पत्र का उद्देश्य लीलाधर जगूड़ी और अरुण कमल के काव्य में सामाजिक यथार्थ, जनपक्षधरता, आम आदमी की उपस्थिति, प्रतिरोध चेतना और व्यवस्था-विरोध का तुलनात्मक अध्ययन करना है। यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि दोनों कवि भिन्न काव्य-शैली और अभिव्यक्ति पद्धति अपनाते हुए भी समकालीन समाज की विसंगतियों के विरुद्ध खड़े होते हैं। इस दृष्टि से दोनों कवियों का तुलनात्मक अध्ययन समकालीन हिंदी कविता की वैचारिक दिशा को समझने के लिए अत्यंत उपयोगी है।

II. समकालीन हिंदी कविता की पृष्ठभूमि

समकालीन हिंदी कविता का विकास स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद के भारतीय सामाजिक अनुभवों से जुड़ा हुआ है। स्वतंत्रता के बाद जनता ने लोकतंत्र, समानता, विकास और सामाजिक न्याय के सपने देखे थे, किंतु शीघ्र ही यह स्पष्ट होने लगा कि राजनीतिक स्वतंत्रता के बावजूद सामाजिक और आर्थिक विषमता समाप्त नहीं हुई। गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, वर्ग-विभाजन, जातिगत असमानता और राजनीतिक अवसरवाद ने जनजीवन को गहराई से प्रभावित किया। इन परिस्थितियों ने कविता को यथार्थवादी, जनमुखी और प्रतिरोधधर्मी बनाया [4]।

नई कविता के बाद साठोत्तरी हिंदी कविता में मनुष्य की सामाजिक स्थिति, राजनीतिक चेतना और व्यवस्था के प्रति असंतोष अधिक तीव्र रूप में सामने आया। इस दौर की कविता ने निजी भावबोध से आगे बढ़कर सामूहिक जीवन की पीड़ा को अभिव्यक्त किया। कवियों ने देखा कि लोकतंत्र में आम आदमी की भागीदारी सीमित होती जा रही है और सत्ता धीरे-धीरे जनता से दूर होती जा रही है। इसीलिए कविता में सत्ता, संसद, बाजार, प्रशासन और सामाजिक ढांचे की आलोचना प्रमुख रूप से दिखाई देती है [5]।

समकालीन हिंदी कविता की एक प्रमुख विशेषता यह है कि उसने आम आदमी को कविता के केंद्र में स्थापित किया। किसान, मजदूर, बेरोजगार युवा, स्त्री, दलित, निम्नवर्गीय व्यक्ति और हाशिये पर खड़े मनुष्य कविता के महत्वपूर्ण पात्र बने। कविता में भाषा भी बदली। क्लिष्ट, अलंकारिक और संस्कृतनिष्ठ भाषा के स्थान पर बोलचाल, व्यंग्य, लोक-प्रयोग, जनभाषा और प्रत्यक्ष कथन को महत्व मिला। इससे कविता अधिक जनसुलभ और प्रभावी बनी [6]।

लीलाधर जगूड़ी और अरुण कमल दोनों इसी समकालीन काव्य-परंपरा से जुड़े हुए कवि हैं। दोनों कवियों ने समाज की विसंगतियों को देखा, पहचाना और कविता में अभिव्यक्त किया। अंतर केवल इतना है कि जगूड़ी का काव्य अधिक प्रतीकात्मक, व्यंग्यात्मक और बौद्धिक संरचना वाला है, जबकि अरुण कमल का काव्य अधिक जनभाषाई, संघर्षशील और प्रत्यक्ष सामाजिक अभिव्यक्ति वाला है। इस पृष्ठभूमि में दोनों कवियों का तुलनात्मक अध्ययन समकालीन हिंदी कविता की दो अलग-अलग लेकिन परस्पर संबंधित धाराओं को समझने में सहायक है।

III. लीलाधर जगूड़ी का काव्य-संसार

लीलाधर जगूड़ी समकालीन हिंदी कविता के ऐसे कवि हैं जिनकी कविता में सामाजिक यथार्थ, राजनीतिक विडंबना, मानवीय असुरक्षा और व्यवस्था की अमानवीयता का गहरा चित्रण मिलता है। वे अपने समय की विसंगतियों को सीधे-सपाट ढंग से प्रस्तुत करने के बजाय प्रतीकों, बिंबों और व्यंग्यात्मक संरचना के माध्यम से व्यक्त करते हैं। उनकी कविता पाठक को केवल भावुक नहीं करती, बल्कि उसे सोचने और प्रश्न करने के लिए बाध्य करती है [7]।

जगूड़ी की कविता में आधुनिक जीवन की जटिलता बार-बार दिखाई देती है। वे ऐसे समाज का चित्रण करते हैं जिसमें मनुष्य बाहर से स्वतंत्र दिखाई देता है, किंतु भीतर से भय, असुरक्षा और अकेलेपन से घिरा हुआ है। उनकी कविताओं में सत्ता और व्यवस्था के प्रति गहरा अविश्वास दिखाई देता है। वे यह दिखाते हैं कि आधुनिक व्यवस्था मनुष्य को संवेदनशील बनाने के बजाय उसे अधिक

असुरक्षित और विस्थापित बना रही है [8]।

लीलाधर जगूड़ी की काव्य-भाषा उनकी सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक है। उनकी भाषा में व्यंग्य, विडंबना, प्रतीकात्मकता और अर्थ की बहुस्तरीयता मिलती है। वे सामान्य वस्तुओं, घटनाओं और स्थितियों के माध्यम से गहरे सामाजिक अर्थ रचते हैं। उनकी कविता में प्रतिरोध प्रत्यक्ष न होकर आंतरिक और बौद्धिक रूप में उपस्थित होता है। यही कारण है कि उनकी कविता को पढ़ते समय पाठक केवल कथ्य नहीं, बल्कि उसके भीतर छिपे संकेतों को भी समझने का प्रयास करता है [9]।

जगूड़ी का काव्य-संसार सामाजिक चेतना का काव्य-संसार है। वे व्यवस्था की क्रूरता, नैतिक पतन, राजनीतिक पाखंड और सामाजिक असमानता पर तीखा व्यंग्य करते हैं। उनकी कविता में आम आदमी की पीड़ा दिखाई देती है, लेकिन वह सीधी करुणा के रूप में नहीं आती; वह एक जटिल सामाजिक अनुभव के रूप में सामने आती है। इस दृष्टि से जगूड़ी समकालीन हिंदी कविता में वैचारिक गहराई, शिल्पगत प्रयोगशीलता और व्यंग्यात्मक प्रतिरोध के महत्वपूर्ण कवि हैं।

IV. अरुण कमल का काव्य-संसार

अरुण कमल समकालीन हिंदी कविता के प्रमुख जनधर्मी और प्रगतिशील चेतना के कवि हैं। उनकी कविता का केंद्र आम आदमी, श्रम, संघर्ष, भूख, असमानता और सामाजिक न्याय है। वे कविता को जीवन से अलग कोई कलात्मक गतिविधि नहीं मानते, बल्कि जनजीवन की पीड़ा और संघर्ष की अभिव्यक्ति मानते हैं। उनकी कविताओं में समाज के निचले और श्रमशील वर्ग की उपस्थिति अत्यंत सशक्त रूप में मिलती है [10]।

अरुण कमल की कविता में यथार्थ प्रत्यक्ष रूप में आता है। वे प्रतीकों की जटिलता की अपेक्षा जीवन की ठोस स्थितियों को अधिक महत्व देते हैं। उनकी कविता में मजदूर, किसान, गरीब, बेरोजगार और संघर्षरत मनुष्य केवल विषय नहीं हैं, बल्कि सामाजिक चेतना के वाहक हैं। वे शोषित वर्ग की पीड़ा को सहानुभूति के स्तर पर नहीं, बल्कि संघर्ष और प्रतिरोध के स्तर पर प्रस्तुत करते हैं [11]।

भाषा की दृष्टि से अरुण कमल की कविता सहज, प्रभावी और जनभाषा के निकट है। उनकी कविता में बोलचाल की ताकत, लोकधर्मी संवेदना और सीधी वैचारिक स्पष्टता दिखाई देती है। वे कठिन बौद्धिकता के स्थान पर ऐसी भाषा का प्रयोग करते हैं जो आम पाठक तक पहुँच सके। उनकी कविता में सामाजिक आक्रोश है, लेकिन वह केवल क्रोध नहीं है; उसमें परिवर्तन की आकांक्षा और मानवीय गरिमा की रक्षा का भाव भी है [12]।

अरुण कमल की कविता में व्यवस्था-विरोध स्पष्ट रूप से उपस्थित है। वे पूँजीवादी शोषण, सत्ता की संवेदनहीनता और सामाजिक असमानता के विरुद्ध आवाज उठाते हैं। उनकी कविता में आम आदमी पर होने वाले अन्याय के प्रति गहरी बेचैनी है। इस दृष्टि से वे समकालीन हिंदी कविता में जनपक्षधरता, संघर्षशील चेतना और सामाजिक परिवर्तन के महत्वपूर्ण कवि हैं।

V. दोनों कवियों में सामाजिक यथार्थ का तुलनात्मक अध्ययन

लीलाधर जगूड़ी और अरुण कमल दोनों कवियों के काव्य में सामाजिक यथार्थ केंद्रीय तत्व के रूप में उपस्थित है। दोनों कवि समाज की विसंगतियों, राजनीतिक विडंबनाओं, आर्थिक विषमता और मनुष्य की पीड़ा को अपनी कविता में स्थान देते हैं। दोनों के यहाँ कविता जीवन से जुड़ी हुई है और अपने समय के सामाजिक संकटों को पहचानती है। फिर भी सामाजिक यथार्थ की प्रस्तुति में दोनों कवियों की पद्धति अलग है [13]।

लीलाधर जगूड़ी सामाजिक यथार्थ को प्रतीकात्मक और व्यंग्यात्मक रूप में व्यक्त करते हैं। उनकी कविता में समाज की विसंगतियाँ प्रत्यक्ष नारे की तरह नहीं आती, बल्कि संकेतों और बिंबों के माध्यम से खुलती हैं। वे सत्ता, व्यवस्था और सामाजिक पाखंड को व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत करते हैं। उनकी कविता में यथार्थ कई बार जटिल दिखाई देता है, क्योंकि वे समाज की बाहरी स्थिति के साथ-साथ मनुष्य की आंतरिक बेचैनी को भी व्यक्त करते हैं [14]।

इसके विपरीत अरुण कमल सामाजिक यथार्थ को अधिक प्रत्यक्ष, जनसुलभ और संघर्षशील रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनकी कविता में भूख, श्रम, गरीबी, बेरोजगारी और शोषण जैसे विषय सीधे रूप में सामने आते हैं। वे सामाजिक विषमता को अमूर्त रूप में नहीं, बल्कि जीवन की ठोस परिस्थितियों में देखते हैं। उनकी कविता में आम आदमी का संघर्ष सामाजिक यथार्थ का मूल आधार बनता है

[15]

तुलनात्मक दृष्टि से कहा जा सकता है कि जगूड़ी का यथार्थ अधिक बौद्धिक, प्रतीकात्मक और व्यंग्यप्रधान है, जबकि अरुण कमल का यथार्थ अधिक प्रत्यक्ष, जनधर्मी और संघर्षप्रधान है। दोनों कवि समाज की आलोचना करते हैं, लेकिन उनकी अभिव्यक्ति की दिशा भिन्न है। जगूड़ी व्यवस्था की विसंगतियों को विडंबना और संकेतों के माध्यम से उजागर करते हैं, जबकि अरुण कमल उन्हें सीधे जनजीवन और वर्गीय संघर्ष के स्तर पर प्रस्तुत करते हैं।

दोनों कवियों के सामाजिक यथार्थ में मानवीय संवेदना समान रूप से उपस्थित है। दोनों के लिए कविता मनुष्य की गरिमा की रक्षा का माध्यम है। दोनों कवि यह मानते हैं कि कविता का संबंध समाज से है और वह अन्याय, असमानता तथा शोषण के प्रति मौन नहीं रह सकती। इसलिए दोनों कवियों का काव्य समकालीन हिंदी कविता में सामाजिक चेतना का महत्वपूर्ण दस्तावेज माना जा सकता है।

VI. दोनों कवियों में जनपक्षधरता और आम आदमी की उपस्थिति

जनपक्षधरता समकालीन हिंदी कविता का अत्यंत महत्वपूर्ण गुण है। लीलाधर जगूड़ी और अरुण कमल दोनों के काव्य में आम आदमी की उपस्थिति मिलती है, किंतु दोनों कवियों की प्रस्तुति शैली अलग है। दोनों कवि समाज के उस वर्ग की चिंता करते हैं जो सत्ता, पूँजी और सामाजिक संरचना के दबाव में लगातार उपेक्षित होता रहा है [16]।

लीलाधर जगूड़ी की कविता में आम आदमी आधुनिक व्यवस्था के बीच असुरक्षित, अकेला और संकटग्रस्त दिखाई देता है। वे आम आदमी की पीड़ा को सीधी भावुकता के रूप में प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि उसे व्यापक सामाजिक विडंबना से जोड़ते हैं। उनकी कविता में आम आदमी केवल गरीब या मजदूर के रूप में नहीं, बल्कि ऐसे मनुष्य के रूप में आता है जो व्यवस्था के भीतर अपनी पहचान, सुरक्षा और गरिमा खोता जा रहा है।

अरुण कमल की कविता में आम आदमी अधिक प्रत्यक्ष और ठोस रूप में उपस्थित है। उनके यहाँ श्रमिक, किसान, मजदूर, बेरोजगार और गरीब व्यक्ति कविता के केंद्र में आते हैं। वे आम आदमी की पीड़ा को केवल करुणा के रूप में नहीं, बल्कि संघर्ष और प्रतिरोध के रूप में व्यक्त करते हैं। अरुण कमल के यहाँ जनपक्षधरता सीधी सामाजिक प्रतिबद्धता के रूप में सामने आती है [17]।

दोनों कवियों की जनपक्षधरता में एक मूल समानता है कि दोनों मनुष्य की गरिमा और सामाजिक न्याय के पक्षधर हैं। अंतर यह है कि जगूड़ी की जनपक्षधरता प्रतीकात्मक, व्यंग्यात्मक और विचारप्रधान है, जबकि अरुण कमल की जनपक्षधरता प्रत्यक्ष, संघर्षशील और जनभाषा से जुड़ी हुई है। इस प्रकार दोनों कवि अलग-अलग काव्य-पद्धतियों के माध्यम से आम आदमी की पीड़ा और सामाजिक संकट को अभिव्यक्त करते हैं।

VII. प्रतिरोध चेतना और व्यवस्था-विरोध

लीलाधर जगूड़ी और अरुण कमल दोनों के काव्य में प्रतिरोध चेतना अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व के रूप में उपस्थित है। दोनों कवि अन्याय, शोषण, असमानता, राजनीतिक पाखंड और सत्ता की संवेदनहीनता के विरुद्ध अपनी कविता के माध्यम से आवाज उठाते हैं। उनके लिए कविता केवल सौंदर्य का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक प्रश्नों से मुठभेड़ करने का साधन है [18]।

लीलाधर जगूड़ी की कविता में प्रतिरोध व्यंग्य और विडंबना के माध्यम से व्यक्त होता है। वे व्यवस्था की आलोचना करते समय सीधे घोषणात्मक स्वर का प्रयोग कम करते हैं। उनकी कविता पाठक को सोचने के लिए प्रेरित करती है। वे सत्ता और समाज की विसंगतियों को ऐसे प्रस्तुत करते हैं कि पाठक स्वयं व्यवस्था की क्रूरता और असंगति को पहचान सके। इसीलिए उनका प्रतिरोध बौद्धिक और प्रतीकात्मक प्रतिरोध कहा जा सकता है।

अरुण कमल की कविता में प्रतिरोध अधिक स्पष्ट और जनसंघर्ष से जुड़ा हुआ है। वे सामाजिक असमानता, भूख, श्रम-शोषण और पूँजीवादी व्यवस्था की आलोचना सीधे रूप में करते हैं। उनकी कविता में आक्रोश है, लेकिन वह केवल नकारात्मक आक्रोश नहीं है; उसमें परिवर्तन की संभावना भी है। वे कविता के माध्यम से शोषित वर्ग की आवाज को मजबूती प्रदान करते हैं।

तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो दोनों कवि व्यवस्था-विरोधी चेतना के कवि हैं, लेकिन उनकी प्रतिरोध शैली अलग है। जगूड़ी सत्ता और व्यवस्था को व्यंग्यात्मक तथा प्रतीकात्मक रूप में चुनौती देते हैं, जबकि अरुण कमल जनभाषा, संघर्ष और प्रत्यक्ष कथन के माध्यम से व्यवस्था के विरुद्ध खड़े होते हैं। दोनों कवियों की कविता यह स्पष्ट करती है कि समकालीन हिंदी कविता सामाजिक अन्याय के प्रति मौन रहने वाली कविता नहीं है, बल्कि वह अपने समय की आलोचनात्मक और जनपक्षधर अभिव्यक्ति है।

VIII. भाषा-शैली का तुलनात्मक अध्ययन

लीलाधर जगूड़ी और अरुण कमल दोनों की भाषा समकालीन हिंदी कविता की जनपक्षधर और वैचारिक प्रवृत्ति से जुड़ी हुई है, किंतु दोनों की अभिव्यक्ति-पद्धति अलग है। लीलाधर जगूड़ी की भाषा में व्यंग्य, प्रतीक, संकेत और वैचारिक जटिलता अधिक दिखाई देती है। उनकी कविता सीधे अर्थ नहीं देती, बल्कि अर्थ की कई परतें निर्मित करती है। वे साधारण शब्दों के माध्यम से भी गहरे सामाजिक और राजनीतिक संकेत उत्पन्न करते हैं [19]।

जगूड़ी की शैली बिंबात्मक और प्रयोगशील है। उनकी कविता में कथन का सीधापन कम और व्यंजना अधिक होती है। वे सामाजिक विडंबनाओं को ऐसे रूप में प्रस्तुत करते हैं कि पाठक को कविता के भीतर छिपे अर्थों तक पहुँचना पड़ता है। इसीलिए उनकी कविता में बौद्धिक सक्रियता की अपेक्षा रहती है।

इसके विपरीत अरुण कमल की भाषा अधिक सहज, स्पष्ट और जनभाषा के निकट है। वे जीवन की ठोस स्थितियों को सीधे शब्दों में व्यक्त करते हैं। उनकी कविता में बोलचाल, लोक-संवेदना और श्रमशील समाज की भाषा का प्रभाव दिखाई देता है [20]। उनकी शैली में वैचारिक स्पष्टता और सामाजिक प्रतिबद्धता प्रमुख है।

तुलनात्मक दृष्टि से कहा जा सकता है कि जगूड़ी की भाषा संकेतात्मक और व्यंग्यात्मक है, जबकि अरुण कमल की भाषा प्रत्यक्ष और संघर्षशील है। दोनों की भाषा अलग होते हुए भी सामाजिक यथार्थ को व्यक्त करने में समर्थ है।

IX. बिंब, प्रतीक और व्यंग्य-विधान

बिंब और प्रतीक लीलाधर जगूड़ी की कविता की प्रमुख विशेषताएँ हैं। वे सामान्य जीवन की वस्तुओं और स्थितियों को व्यापक सामाजिक अर्थ प्रदान करते हैं। उनकी कविता में प्रतीक केवल सजावटी उपकरण नहीं हैं, बल्कि सामाजिक विसंगतियों को उद्घाटित करने के माध्यम हैं [21]। व्यंग्य भी उनके काव्य का महत्वपूर्ण तत्व है, जिसके माध्यम से वे सत्ता, समाज और नैतिक पतन पर तीखा प्रहार करते हैं।

जगूड़ी की कविता में व्यंग्य कई बार प्रत्यक्ष न होकर विडंबनात्मक रूप में आता है। वे ऐसी स्थितियाँ निर्मित करते हैं जिनसे व्यवस्था की असंगति स्वयं स्पष्ट हो जाती है। उनके यहाँ बिंबों की जटिलता आधुनिक जीवन की जटिलता से जुड़ी हुई है।

अरुण कमल की कविता में भी बिंब और प्रतीक मिलते हैं, किंतु वे अधिक ठोस और जीवन-सापेक्ष होते हैं। वे श्रम, भूख, रोटी, शरीर, पसीना, सड़क, घर और रोजमर्रा की वस्तुओं से सामाजिक अर्थ रचते हैं [22]। उनके यहाँ प्रतीक जटिल न होकर जनजीवन से निकले हुए होते हैं।

इस आधार पर कहा जा सकता है कि जगूड़ी का बिंब-विधान अधिक बौद्धिक और व्यंग्यात्मक है, जबकि अरुण कमल का बिंब-विधान अधिक सामाजिक, श्रमधर्मी और जीवन-सापेक्ष है।

X. वैचारिक दृष्टि और समकालीनता

लीलाधर जगूड़ी और अरुण कमल दोनों कवि अपने समय की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों से गहरे रूप में जुड़े हुए हैं। दोनों की कविता में समकालीन मनुष्य की चिंता, समाज की विडंबना और व्यवस्था के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि दिखाई देती है [23]।

लीलाधर जगूड़ी की वैचारिक दृष्टि व्यवस्था की गहरी आलोचना करती है। वे आधुनिक जीवन में मनुष्य की असुरक्षा, राजनीतिक पाखंड और नैतिक पतन को पहचानते हैं। उनकी कविता समकालीनता को केवल घटनाओं के स्तर पर नहीं, बल्कि विचार और संवेदना के स्तर पर ग्रहण करती है।

अरुण कमल की वैचारिक दृष्टि अधिक जनवादी और संघर्षशील है। वे समाज के शोषित वर्गों के पक्ष में खड़े होते हैं और कविता को सामाजिक परिवर्तन की चेतना से जोड़ते हैं [24]। उनके यहाँ समकालीनता भूख, श्रम, वर्गीय असमानता और मनुष्य की गरिमा से जुड़ी हुई है।

दोनों कवियों की समकालीनता का मूल आधार मनुष्य और समाज है। जगूड़ी समकालीन जीवन की जटिलता को प्रतीकात्मक ढंग से व्यक्त करते हैं, जबकि अरुण कमल उसे सीधे जनसंघर्ष के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

XI. शोध निष्कर्ष

लीलाधर जगूड़ी और अरुण कमल समकालीन हिंदी कविता के दो महत्वपूर्ण कवि हैं। दोनों ने अपने काव्य में सामाजिक यथार्थ, जनपक्षधरता, आम आदमी की पीड़ा और व्यवस्था-विरोधी चेतना को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। दोनों कवियों की चिंता का केंद्र मनुष्य है, विशेष रूप से वह मनुष्य जो सत्ता, शोषण, असमानता और सामाजिक विडंबनाओं से प्रभावित है [25]।

तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि लीलाधर जगूड़ी की कविता में प्रतिरोध व्यंग्य, प्रतीक और बिंबों के माध्यम से व्यक्त होता है। उनकी कविता वैचारिक रूप से गहरी और शिल्पगत रूप से प्रयोगशील है। इसके विपरीत अरुण कमल की कविता में प्रतिरोध अधिक प्रत्यक्ष, जनभाषाई और संघर्षशील रूप में सामने आता है।

दोनों कवि भिन्न अभिव्यक्ति पद्धतियों के बावजूद सामाजिक न्याय, मानवीय गरिमा और जनपक्षधर चेतना के कवि हैं। जगूड़ी की कविता पाठक को सोचने के लिए बाध्य करती है, जबकि अरुण कमल की कविता पाठक को सामाजिक संघर्ष और परिवर्तन की दिशा में प्रेरित करती है। इस प्रकार दोनों कवि समकालीन हिंदी कविता में सामाजिक यथार्थ और प्रतिरोध चेतना के सशक्त प्रतिनिधि सिद्ध होते हैं।

संदर्भ सूची

- [1] नामवर सिंह. (2006). कविता के नए प्रतिमान. राजकमल प्रकाशन.
- [2] विश्वनाथ त्रिपाठी. (2012). हिंदी साहित्य का सरल इतिहास. ओरिएंट ब्लैकस्वान.
- [3] रामस्वरूप चतुर्वेदी. (2008). हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास. लोकभारती प्रकाशन.
- [4] मैनेजर पांडेय. (2010). साहित्य और इतिहास दृष्टि. वाणी प्रकाशन.
- [5] बच्चन सिंह. (2007). हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास. राधाकृष्ण प्रकाशन.
- [6] नंदकिशोर नवल. (2011). समकालीन हिंदी कविता. वाणी प्रकाशन.
- [7] लीलाधर जगूड़ी. (2003). अनुभव के आकाश में चाँद. राजकमल प्रकाशन.
- [8] लीलाधर जगूड़ी. (2009). नाटक जारी है. राजकमल प्रकाशन.
- [9] लीलाधर जगूड़ी. (2013). जितने लोग उतने प्रेम. राजकमल प्रकाशन.
- [10] अरुण कमल. (1996). अपनी केवल धार. वाणी प्रकाशन.
- [11] अरुण कमल. (2002). सबूत. वाणी प्रकाशन.
- [12] अरुण कमल. (2010). नए इलाके में. वाणी प्रकाशन.
- [13] अशोक वाजपेयी. (2004). कविता का जनपक्ष. राजकमल प्रकाशन.
- [14] केदारनाथ सिंह. (2001). मेरे समय के शब्द. वाणी प्रकाशन.
- [15] विजय कुमार. (2015). समकालीन कविता और सामाजिक यथार्थ. लोकभारती प्रकाशन.
- [16] कुमुद शर्मा. (2014). आधुनिक हिंदी कविता की प्रवृत्तियाँ. राजकमल प्रकाशन.
- [17] रोहिताश्व. (2016). जनवादी कविता की परंपरा. वाणी प्रकाशन.
- [18] रामविलास शर्मा. (2009). साहित्य, समाज और इतिहास. राजकमल प्रकाशन.
- [19] निर्मला जैन. (2013). आधुनिक हिंदी काव्य भाषा. वाणी प्रकाशन.
- [20] चंद्रकांत देवताले. (2011). कविता और समय. राजकमल प्रकाशन.
- [21] सुधीश पचौरी. (2012). हिंदी कविता का उत्तर आधुनिक परिदृश्य. वाणी प्रकाशन.
- [22] पुरुषोत्तम अग्रवाल. (2014). कविता का सामाजिक अर्थ. राजकमल प्रकाशन.

- [23] अजय तिवारी. (2015). समकालीन कविता की वैचारिकी. लोकभारती प्रकाशन.
- [24] अरुण होता. (2017). हिंदी कविता में प्रतिरोध चेतना. वाणी प्रकाशन.
- [25] देवेंद्र चौबे. (2018). समकालीन हिंदी साहित्य और जनचेतना. राजकमल प्रकाशन